

दिल्ली में बारिश ने 41 साल का रिकॉर्ड तोड़ा: सेना के दो जवान समेत 12 लोगों की मौत

तीन दिन से बंद अमरनाथ यात्रा फिर से शुरू



नई दिल्ली, 9 जुलाई (एजेंसियां)। दिल्ली, हिमाचल, पंजाब सहित देश के उत्तरी राज्यों में भारी बारिश हो रही है। दिल्ली में 41 साल का रिकॉर्ड टूटा। 1982 के बाद से जुलाई में एक दिन में सबसे ज्यादा 153 मिमी बारिश हुई। इससे पहले 25 जुलाई 1982 में 169.9 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई थी। 2003 में 24 घंटे में 133.4 मिमी बारिश हुई थी। वहाँ 2013 में दिल्ली में 123.4 मिमी बारिश हुई थी। बारिश के चलते जम्मू-कश्मीर के पुंछ में सेना के दो जवान पेशाना नदी पार करते हुए जल गया। वहाँ हिमाचल में 5, जम्मू में 2 और यूपी में बिजली गिरने से 3 लोगों की मौत हो गई। मौसम विभाग ने अगले 24 घंटे में राजस्थान और मध्य प्रदेश समेत 23 राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट जारी

अगले 24 घंटे कैसे रहेंगे
इन राज्यों में तेज बारिश होगी: मध्य प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मिज़ोराम, त्रिपुरा, ओडिशा, गुजरात, गोवा और महाराष्ट्र। इन राज्यों में मौसम साफ़ कारेल, कर्नाटक, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में बारिश की संभावना नहीं जाती है।

यूपी के मुरादाबाद के 12 गांवों में बाढ़ जैसे हालात
यूपी में आज भी भारी बारिश का दौर जारी रहा। मुरादाबाद में ढेला नदी का पानी 12 गांवों में पहुंच करता है। यहाँ बाढ़ जैसे हालात हैं। आज पश्चिमी यूपी के 8 जिलों अमरावाती, बागपत, बिजनार, मेरठ, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर और शामली में भारी से भारी बारिश हो सकती है। 17 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट है और 14 जिलों में गंगा-चमक के साथ मद्यम बारिश के अनुमान है।

जिलों में भारी बारिश का अलर्ट है।

एमी में 27 जिलों में तेज बारिश का अलर्ट जारी किया गया है।

मध्य प्रदेश में 27 जिलों में तेज बारिश का अलर्ट जारी किया गया है।

यूपी के मुरादाबाद के 12 गांवों में बाढ़ जैसे हालात



एमी में 27 जिलों में तेज बारिश का अलर्ट

मध्य प्रदेश में 27 जिलों में तेज बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। भोपाल, विदिशा, रायसेन, राजस्थान के 8 जिलों में भारी बारिश और बिजली का अलर्ट जारी किया है। रविवार को तेज बारिश को लेकर प्रदेश के 5 जिलों में आरेज अलर्ट जारी किया है जिसमें विशनगंज, अरियां, अनंपुर, शहडोल, उमरिया, डिल्ली, कर्नाटक, जबलपुर, छिंवाड़ा, शिवानी, मडला, पना, दमाह, सारगढ़, छत्तीसगढ़, निवाड़ी जिले शामिल हैं। जबकि 5 अन्य जिलों में बाढ़ी जगह हल्की बारिश हो सकती है।

राजस्थान के 8 जिलों में आज भी बारिश का अलर्ट

राजस्थान के 8 जिलों में आज भी बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। द्वृष्टिनं नीकर में बाढ़ जैसे हालात हैं। अगले 24 से 48 इस तरह बारिश का दौर जारी रहने की संभावना जाती है। जयपुर भौमप फैक्ट्र से जारी फैक्ट्र कारस्ट के मुताबिक आज जालोर, पाली, राजसमंद, अंजमर, अलवर, जयपुर, नागार, भौमलावा जिले में बारिश होने का अनुमान है।

हरियाणा के 55 शहरों में बारिश का रेट अलर्ट

हरियाणा में मौसम को लेकर चंडीगढ़ मौसम विभाग ने 55 शहरों में बारिश को लेकर रेट अलर्ट जारी किया है। राज्य के नूह, पलवल, बलभग्न, सोहना, गुरुग्राम, अंटला, महेंगढ़, कर्नीना, चरखी दादरी, भिवानी, बावल, रेवाड़ी के अलावा कुछ और जिलों में बारिश का अलर्ट है।

मलेशिया की तीन दिवसीय यात्रा पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह हुए रवाना डिफेंस सहित कई दोत्रों पर होगी वार्ता



नई दिल्ली, 9 जुलाई (एजेंसियां)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह रविवार को तीन दिवसीय आधिकारिक यात्रा पर मलेशिया की जाएंगी। उन्होंने यात्रा का मुख्य उद्देश्य मलेशिया और भारत के बीच रक्षा सहयोग को गहरा करना है।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा

तीन दिवसीय आधिकारिक यात्रा पर मलेशिया के कुआलालापुर पहुंचूगा। मैं अपने समकक्ष दातों से सीधे माहम्मद हसन पर साथ द्वितीय राजनाथ सिंह करने और दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग को गहरा करने के लिए उत्सुक हूं।

मलेशिया के पीएम और रक्षा मंत्री से करेंगे मुलाकात

वहाँ दो दिन के बीच रक्षा मंत्री और वैशिक कुदूमों पर विचारों का आदान-प्रदान करेंगे। राजनाथ सिंह मलेशिया के प्रधानमंत्री वाईबी दातों

से भी मुलाकात करेंगे।

भारत और मलेशिया के बीच गहरे संबंध

रक्षा मंत्रालय के बयान में कहा गया कि भारत और मलेशिया का पूरे क्षेत्र की शांति और समृद्धि में साझा हित है। दोनों देशों के बीच एक मजबूत और बहुआयामी संबंध है, जो रक्षा और

सेवा के बीच एक अद्वितीय सम्बन्ध है।

भारत और मलेशिया के बीच गहरे संबंध

रक्षा मंत्रालय के बयान में कहा गया कि भारत और मलेशिया का पूरे क्षेत्र की शांति और समृद्धि में साझा हित है। दोनों देशों के बीच एक मजबूत और बहुआयामी संबंध है, जो रक्षा और

सेवा के बीच एक अद्वितीय सम्बन्ध है।

प्रधानमंत्री ने कहा

मलेशिया के प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और

मलेशिया के बीच एक अद्वितीय सम्बन्ध है।

भारत-मलेशिया के बीच रुचि के बीच गहरे संबंध

मलेशिया के प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और

मलेशिया के बीच एक अद्वितीय सम्बन्ध है।

भारत-मलेशिया के बीच गहरे संबंध

मलेशिया के प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और

मलेशिया के बीच एक अद्वितीय सम्बन्ध है।

भारत-मलेशिया के बीच गहरे संबंध

मलेशिया के प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और

मलेशिया के बीच एक अद्वितीय सम्बन्ध है।

भारत-मलेशिया के बीच गहरे संबंध

मलेशिया के प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और

मलेशिया के बीच एक अद्वितीय सम्बन्ध है।

भारत-मलेशिया के बीच गहरे संबंध

मलेशिया के प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और

मलेशिया के बीच एक अद्वितीय सम्बन्ध है।

भारत-मलेशिया के बीच गहरे संबंध

मलेशिया के प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और

मलेशिया के बीच एक अद्वितीय सम्बन्ध है।

भारत-मलेशिया के बीच गहरे संबंध

मलेशिया के प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और

मलेशिया के बीच एक अद्वितीय सम्बन्ध है।

भारत-मलेशिया के बीच गहरे संबंध

मलेशिया के प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और

मलेशिया के बीच एक अद्वितीय सम्बन्ध है।

भारत-मलेशिया के बीच गहरे संबंध

मलेशिया के प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और

मलेशिया के बीच एक अद्वितीय सम्बन्ध है।

भारत-मलेशिया के बीच गहरे संबंध

मलेशिया के प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और

मलेशिया के बीच एक अद्वितीय सम्बन्ध है।

भारत-मलेशिया के बीच गहरे संबंध

मलेशिया के प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और

मलेशिया के बीच एक अद्वितीय सम्बन्ध है।

भारत-मलेशिया के बीच गहरे संबंध

मलेशिया के प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और

मलेशिया के बीच एक अद्वितीय सम्बन्ध है।

भारत-मलेशिया के बीच गहरे संबंध</p

मेरा हैदराबाद

जब गलतियां
करने की स्वातंत्र न
हो
तब उस स्वातंत्रता
का कोई अर्थ नहीं

टमाटर के साथ लोगों को रुलाने लगी है हरी मिर्च

बढ़ती कीमतों से उपभोक्ताओं की जेब पर पड़ा दबाव



हैदराबाद, 9 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। पहले टमाटर और अब हरी मिर्च आम आदमी की जेब पर डाका डाना में शामिल हो गई है। भारतीय खाद्य पदार्थों का एक अनिवार्य हस्ता होने के नाते, हरी मिर्च को रसोई में रखने से पहेज नहीं किया जा सकता है, लेकिं तेज कीमत बढ़ि को देखे हुए कई परवारों के लिए इसे खरीदने की कोशिश करना मुश्किल हो गया है।

साथ ही, इन दिनों बाजारों में ज्यादा स्टॉक उपलब्ध नहीं है और सब्जी मंडियों में जाने वालों को हरी मिर्च सीमित मात्रा में ही मिल पाती है। मदजापेट मंडी के एक विक्रेता ने कहा कि गर्मियों के दौरान असामान्य बारिश से फसलों को नुकसान हुआ, जिससे उत्पादन कम हो गया।

मिर्च की कीमतों से उपभोक्ताओं को अचूक उत्पादन कम हो गया।

उन्होंने कहा कि अब, केवल छोटी मात्रा ही उपलब्ध है और स्वाभाविक रूप से कीमतें बढ़ रही हैं। मीर आलम मंडी के एक विक्रेता ने बताया कि हरी मिर्च की कीमत में बढ़ि का कारण इस सीजन में कम आपूर्ति को मानते हैं। उन्होंने कहा कि गर्मियों के दौरान असामान्य बारिश से फसलों को नुकसान हुआ, जिससे उत्पादन कम हो गया।

मिर्च की कीमतों में उठाव की वजह से देशी और अब तक कम बारिश के अद्य कराना माना जा रहा है। हरी मिर्च का स्टॉक शहर के बाजारों में आसापास के क्षेत्रों जैसे चेहेरा, विकाराबाद, याचारम और अन्य आसापास के क्षेत्रों से आता है।

मदजापेट सब्जी बाजार में एक किलोग्राम हरी मिर्च

की कीमत 80 रुपये से 100 रुपये के बीच है। इस बीच, मीरआलम मंडी में यह 100 रुपये प्रति किलोग्राम के हिसाब से बेची जा रही है। सफामार्केट और किराने की दुकानों सहित खुदरा बाजार में, कीमते 140 रुपये और 160 रुपये प्रति किलोग्राम तक बढ़ जाती हैं।

सिर्फ घर ही नहीं, इसका तीखा स्वाद होटेल व्यवसायों और कैरिएर के लिए भी कठिन समय दे रहा है। मदजापेट बाजार के एक अन्य विक्रेता ने कहा कि छोटे होटेल व्यवसायों और एटिफिन सेंटर जो इसे बड़ी मात्रा में खरीदते थे, अब सीमित मात्रा में खरीद रहे हैं।



श्री दरबार मैसम्मा कारवान बोनालू महात्सव का शुभारंभ



हैदराबाद, 9 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। श्री श्री दरबार मैसम्मा व महाकाली मैसम्मा देवालय टूर्स बोर्ड और बोनालू उत्सव समिति के चेयरमैन टी. अमर सिंह की मंदिर से श्री दरबार मैसम्मा मंदिर तक घटम यात्रा निकाली गयी। 10 से 14 जुलाई तक प्रतिदिन घटम यात्रा का कार्यक्रम संपन्न होगा, जिसमें एस. राजेश यादव, एस. विनेश दरबार मैसम्मा कारवान बोनालू और एस. चंद्र माता जी के घटम महात्सव सफलतापूर्वक संपन्न होने के लिए माता जी के घटम की विधिवत पूजा-अर्चना, महिलाओं माता जी के दर्शन कर पानी के द्वारा माता जी की गोंद भराई का कार्यक्रम, श्री तुलजा भवानी मंदिर और श्री दरबार मैसम्मा मंदिर प्राणगम में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा। टी. अमर सिंह ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए बोनालू महात्सव को शांतिवर्क अमर-शांति के साथ मनाने का सभी भक्तों से निवेदन किया है। घटम यात्रा का कार्यक्रम संपन्न होगा, जिसमें एस. राजेश यादव, एस. विनेश दरबार मैसम्मा कारवान बोनालू और एस. चंद्र माता जी के घटम को उठाकर कारवान क्षेत्र के घर-घर के लिए जाएंगे और भक्तजन नेता, सामाजिक नेता और धर्मिक एवं सास्कृतिक भक्तों ने बड़ी सख्ती में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

सीएम ने स्वर्गीय साईंचंद को दी श्रद्धांजलि



हैदराबाद, 9 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्यमंत्री के चंद्रेश्वर और राज्य भंडारण नियम के पूर्व

महिला बेडरूम में लटकी मिली

चिंतल बस्ती, चंपापेट में निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर संपन्न



मेडक, 9 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। मेडक शहर के राम नगर में शनिवार देर रात एक 23 वर्षीय विवाहित महिला को उसके आवास पर लटका करा याता था। मंदेह कहा कि श्रौतकांत की पनी श्रीपति शोधा ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। पुलिस के मुताबिक, रविवार तक तक श्रीकांत उठे तो उन्होंने गौंथ, मोहम्मद महमूद अली, पी सविता इंद्रा रेड्डी, गगुलू कमलाकर, एस निरजन रेड्डी, सरकारी सचिवक बाल्का सुमन, संसद और विधायक भी शामिल हुए।

आयोजन के लिए स्थान और प्राप्त बनाने नियमित अधिकृत किया गया। श्रीमती रश्मि अग्रवाल और विकास अग्रवाल को सह-संयोजक के रूप में मनोनीत किया गया। बैठक में श्रावण की सेर का 13 अगस्त को आयोजन करने का निर्णय लिया गया। पूर्व केन्द्रीय समिति सदस्य नियमित सदस्य सीमा अग्रवाल के साथ जोन में किये जानेवाले इस

इस चिकित्सा शिविर के लिए काम करेंगे।

कृष्णा जल विवाद न्यायाधिकरण की समय सीमा 31 मार्च, 2024 तक बढ़ा दी गई

सीमा 31 मार्च, 2024 तक बढ़ा दी गई

हैदराबाद, 9 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। केंद्र सरकार ने शनिवार को कृष्णा जल विवाद न्यायाधिकरण की समय सीमा 31 मार्च, 2024 तक बढ़ा दी है। जल शक्ति मंत्री ने इस आशय का आदेश जारी कर दिया गया। सिंचाई विभाग एक अधिकारी को कहा कि चौक जल विवाद नियम पर फैसला अभी आना बाकी है, इसलिए केंद्र ने समय सीमा बढ़ाने का फैसला किया है। दूसरे दिन, दिव्यनाल का फैसला इस साल 1 अगस्त तक आना है। अधिकारी ने कहा कि तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के दोनों अभी भी चल रहे हैं और फैसले में अधिक समय लाने की संभावना है, इसलिए केंद्र ने द्रिव्यनल की समय सीमा बढ़ाने का फैसला किया है।

कृष्णा जल विवाद न्यायाधिकरण की समय सीमा 31 मार्च, 2024 तक बढ़ा दी गई

सीमा 31 मार्च, 2024 तक बढ़ा दी गई

हैदराबाद, 9 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। एक दुकान में आग लगने से लाखों रुपये की संपत्ति नष्ट हो गई। अग्रिम नियमित संस्थान के लिए आग लगने से लाखों रुपये की संपत्ति नष्ट हो गई।

सीमा 31 मार्च, 2024 तक बढ़ा दी गई

सीमा 31 मार्च

बदले पर उतारु खालिस्तानी

बोत काफी समय से देखने में आ रहा है कि पूरी दुनिया में एक बार फिर खालिस्तान समर्थक तत्त्वों ने सिर उठाना शुरू कर दिया है। हर जगह इनके द्वारा जिस तरह के हालात पैदा किए जा रहे हैं, वह बेहद गंभीर व खतरनाक हैं। यदि समय रहते उनके बाल नहीं बांके गए तो फिर उनकी चुनौती जटिल होती चली जाएगी, जिस पर काबू पाना मुश्किल हो जाएगा। खालिस्तान समर्थकों की हरकतें हाल के दिनों में कनाडा, ब्रिटेन और अमेरिका में स्थित दूतावासों के सामने स्पष्टरूप से दिखाई दी है। उनकी हरकतों से भारत का चिंतित होना स्वाभाविक है। यही बजह है कि भारत ने इन देशों में खालिस्तानी तत्त्वों की गतिविधियों और हिंसा फैलाने की घटनाओं को सिरे से नकार दिया है। गुरुवार को भारत ने साफ शब्दों में ऐसे तत्त्वों को सावधान करते हुए चेताया है कि दूसरे देशों में अपने राजनयिकों और मिशन की सुरक्षा करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। संवंधित देशों से वियना संधि के मुताबिक दूतावासों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की उम्मीद की जाती है। भारत को इस मामले में जिस तरह से चिंता जताने की जरूरत पड़ी, वह अपने आप में उन देशों के लिए गंभीर रूप से विचार का मसला होना चाहिए। नियमों के अनुरूप हर स्तर पर सुरक्षा का भरोसा दिलाने के बावजूद वहां भारतीय दूतावासों के सामने इस तरह के जोखिम भरे हालात कैसे पैदा किए जा रहे हैं। बता दें कि वियना संधि के मुताबिक कूटनीतिक संबंधों के मामले में कई ऐसे नियम हैं, जिनके तहत दूतावासों की इमारतों और उनमें काम करने वाले लोगों को मेजबान देशों की ओर से सुरक्षा मुहैया कराई जाती है। इससे जुड़े नियमों की बाध्यता यहां तक है कि अगर दो देशों के बीच किसी मसले पर बेहद तनाव की स्थिति भी हो, तब भी कोई देश संवंधित देश के उच्चायोग या वहां नियुक्त राजनयिकों और अन्य कर्मचारियों की सुरक्षा का बंदोबस्त करता रहेगा। सबसे हैरानी की बात तो यह है कि आज के दौर में भारत और अमेरिका के संबंधों में जहां नए आयाम दिखाई दे रहे हैं, वहीं उसके बीच भी कुछ दिन पहले अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास में खालिस्तानी कदरपंथियों ने खेलोआम आगजनी की बारदाते की।

जाहिर है इतनी बड़ी वारदात सुरक्षा में चूक के बगैर संभव नहीं है। आखिर उनकी हिम्मत कैसे हुई कि भारतीय दूतावास जैसी सुरक्षित इमरात में दाखिल होकर उन्होंने आग लगा दी। यह सब तब हो रहा है जब अमेरिका में आतंकवादी हमलों की आशंका से लेकर अन्य कई संवेदनशील मामलों के मद्देनजर बरती जाने वाली उच्च स्तरीय चौकसी के तहत दुनिया में सबसे सख्त सुरक्षा व्यवस्था का दावा किया जाता है। बता दें कि कनाडा, ब्रिटेन, अमेरिका और आस्ट्रेलिया जैसे कुछ देशों में भी खालिस्तान के समर्थकों के ताजा उभार ने भारत को चिंता में डाल दिया है। इन देशों में कभी भारतीय राजनयिकों के खिलाफ हिंसा भड़काने वाले पोस्टर लगा दिए जाते हैं तो कभी सीधे हिंस करने की काशिश की जाती है। ऐसी वारदातों की वजह से दूतावासों में राजनयिकों और कर्मचारियों के सामने कई तरह के संकट पैदा हो रहे हैं। स्थिति की नजाकत को देखते हुए भारत ने नई दिल्ली में कनाडा के राजदूत को तलब किया और कनाडा में खालिस्तान समर्थक तत्वों की बढ़ती गतिविधियों पर आपत्ति जताने वाला पत्र भी उन्हें थमा दिया। ऐसे में सबाल लाजिम है कि अगर दूतावासों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी संबंधित देश की है, तो उसमें चूक कर्त्ता और कहां हो रही है। इसके लिए भारत को अलग से चिंता जताने की जरूरत क्योंपड़ रही है? गनीमत है कि भारत के कड़े रख को कनाडा और ब्रिटेन गंभीरता से लेते हुए चरमपंथियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की चेतावनी जारी की है। यह भी ध्यान रखने की जरूरत है कि इस तरह की अवांछित गतिविधियां खालिस्तान समर्थकों की ओर से भारत विरोधी दुष्प्रचार का भी नीतीजा है। अब जरूरत इस बात की है कि जिन देशों में खालिस्तान समर्थकों की अवांछित गतिविधियां चल रही हैं, वहां अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर किसी को भारत के खिलाफ दुष्प्रचार करने या हिंसा भड़काने की छूट देने की गलती न की जाए। वर्ना कभी भी इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं।

आत्मनिर्भर राष्ट्र गैरवशाली इतिहास को जन्म देता है



सजाव ठाकुर व्यक्ति का याद रहती है। स्वावलंबन या आत्मनिर्भरता ही मनुष्य को स्वाधीन बनाने की प्रेरणा देती है। आत्मनिर्भरता की स्थिति में व्यक्ति अपनी इच्छाओं को अपनी सुविधा अनुसार पूरा कर सकता है, इसके लिए दूसरै की तरफ मँझे ताकने की जरूरत नहीं पड़ती है। आत्मनिर्भरता केवल मनुष्य के लिए व्यक्तिगत रूप से ही जरूरी नहीं है, बल्कि राष्ट्र के लिए भी अति आवश्यक है एक स्वतंत्र राष्ट्र अपनी जनता को अपनी भास्तु देने वाला सभी दर्शकों

क्षमता के अनुसार सारा सुविधाएं तथा अन्य जीवन उपयोगी साधन उपलब्ध करा सकता है। भारत स्वतंत्रता के बाद हरित क्रांति सातवें दशक के प्रारंभ के बाद ही खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बन सका, इसके साथ ही भारत में खुशहाली की स्वाभाविक तौर पर बढ़ रही है, पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भी कहा था कि एक राष्ट्र की शक्ति उसकी आत्मनिर्भरता में है दूसरों से उधार लेकर काम चलाने में नहीं, पाकिस्तान की स्थिति बिल्कुल ऐसी ही है वह अभी तक स्वतंत्रता के बाद से 75 वर्ष के बाद भी संपूर्ण रूप से आत्मनिर्भर नहीं हो पाया है, वह कर्जे से डूब गया है और अपने देश में खर्च चलाने के लिए पूरी दुनिया से उधार मांगते हुए घूम रहा है। पाकिस्तान आत्मनिर्भर नहीं होने का एवं उधार की जिंदगी जीने का एक बहुत बड़ा उदाहरण है। जबकि भारत देश विज्ञान, टेक्नोलॉजी, मेडिकल साइंस, इंजीनियरिंग और कृषि सेवा, भानवान्नाधत सफलता प्राप्त कर उस स्वयं अध्ययन करना होगा। इसी प्रकार जीवन के हर क्षेत्र में भी मनुष्य को आत्मनिर्भर होकर मेहनत कर दीक्षित सफलता प्राप्त करनी पड़ेगी। हमारा देश भारत भी आजादी के बाद से आत्मनिर्भरता की ओर अप्रेषित हुआ आज स्थिति यह है कि वह विश्व में विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में आ खड़ा हुआ है। तमाम महापुरुषों के जीवन से भी हमें आत्मनिर्भरता तथा स्वावलंबन की शिक्षा मिलती रहती है महात्मा गांधी अपना कार्य स्वयं किया करते थे। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी दैव दैव आलसी पुकारा है, तब जाकर उनकी जिंदगी पटरी पर आई और हमें परिश्रम कर आत्म निर्भर होने की शिक्षा प्रदान की थी। दूसरों पर निर्भरता हमें दूसरों का अनुसरण करने के लिए मजबूर करती है। दूसरों पर निर्भर होने से हमें केवल अनुरूप ही जीवन जीने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

एक छाटा प्रदेश हा परन्तु अततः वह एक प्रदेश है। दिल्ली प्रदेश विधानसभा के गठन का निर्णय 1993 में कांग्रेस सरकार जिसके प्रधानमंत्री श्री नरसिंहराव व वित्त मंत्री श्री मनमोहन सिंह थे ने लिया था। 1994 में दिल्ली के विधानसभा के प्रथम चुनाव में राज्य को बनाने वाली और केन्द्र सरकार की कांग्रेस पार्टी को बहुमत नहीं मिला था तथा भा.ज.पा. की विधानसभा में सरकार बनी थी जिसके प्रथम मुख्यमंत्री स्व. मदन लाल खुराना फिर स्व. साहब सिंह वर्मा और स्व. श्रीमती सुशमा स्वराज रही। परन्तु केन्द्र ने कभी भी कोई ऐसा कदम नहीं उठाया जिसमें उनके घर हस्तक्षेप या असंविधानिक अलोकतंत्रिक कार्यवाही का आरोप लगा हो। 1999 के चुनाव में भा.ज.पा. दिल्ली के चुनाव में हार गई और कांग्रेस पार्टी की ओर से श्रीमती शीला दीक्षित मुख्यमंत्री बनी उस समय केन्द्र में स्व. अटल बिहारी वातपेयी के नेतृत्व में भा.ज.पा. सरकार सत्ता में रही। परन्तु कभी भी श्रीमती शीला दीक्षित ने केन्द्र के असंविधानिक हस्तक्षेप या दखलबाजी की शिकायत नहीं की। इन दोनों घटनाओं में केन्द्र और दिल्ली राज्य में परस्पर विरोधी सरकारों के रहते हुये भी आपसी गिरिरोध या हस्तक्षेप या असमान या कानून में बदलाव की शिकायत नहीं हुई। दिल्ली प्रदेश की एक विशेष स्थिति है कि वह केन्द्र की राजधानी है और इसलिए पुलिस डी.डी.ए. कानून व्यवस्था जैसे महत्वपूर्ण विशय शुरू स ही केन्द्र सरकार के पास रहे हैं। विचित्र यह है कि भा.ज.पा. उस समय दिल्ली को पूर्ण प्रदेश बनाने की मांग करती रही और यहां तक की पुलिस प्रासन के जो अधिकार केन्द्र के पास है उन्हें भी राज्य सरकार का दान का माग करता रहा है। वस तो नैतिक रूप से भा.ज.पा. का यह दायित्व था कि वह अपने घोशणा पत्र के अनुसार दिल्ली सरकार के अधिकारों को बढ़ाती और अपना वायदा पूरा करती। परन्तु 2014 में बहुमत से केन्द्र में सरकार बनने के बाद भा.ज.पा. सरकार ने अपने घोशणा पत्रों और वायदों को भूला दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की लहर देश में चली। दिल्ली में भी उनके सभी सांसद जीते परन्तु दिल्ली राज्य में उनकी पार्टी भा.ज.पा. को बहुमत नहीं मिल सका। शायद यह मलाल उनके दिल में इतना गहरा है शिकवे एक छोटी सी सरकार को पचा नहीं पा रहे। श्रीमति शीला दीक्षित ने दिल्ली में, दिल्ली के नगर निगमों को तीन हिस्सों में बांटकर तीन नगर निगम बनाये थे। उस समय दिल्ली के नगर निगम में भा.ज.पा. का बहुमत था हो सकता है कि उनके मन में यह रहा हो कि दिल्ली की सूबाई सरकार और नगर निगम का क्षेत्र लगभग बराबर है, इसलिये इसे तीन टुकड़ों में बांटकर छोटा किया जाए। परन्तु दिल्ली की जनता ने उनके इस कदम को उचित नहीं माना और जब नगर निगम के चुनाव हुए तो तीनों नगर निगमों में भा.ज.पा. जीतकर आई। अभी कुछ समय पूर्व केन्द्र सरकार ने फिर तीनों निगमों को तोड़कर एक निगम बनाया। शायद मोदी-शाह की जोड़ी को यह उम्मीद रही होगी कि एक नगर निगम में वे चुनाव जीत जायेंगे और दिल्ली में समानान्तर सरकार चलायेंगे। परन्तु दिल्ली की जनता ने इसे स्वीकार नहीं किया तथा आम आदमी पार्टी को बहुमत दिया। मोदी और शाह की जोड़ी इस पराजय को स्वीकार नहीं कर सकी तथा नगर निगम के गठन में उन्हान अनक प्रकार का वैधानिक और संस्थागत बाधाये खड़ी की यहां तक कि निर्वाचित बहुमत को अल्प मत में बदलने के लिये अवैधानिक नामजदगियां तक की जिन्हे बाद में सुप्रीम कोर्ट ने निरस्त किया और अंततः वहां आम आदमी पार्टी का मेयर चुना गया। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को निरस्त कर दिल्ली की बादशाहत को कायम रखने के लिये लाये गये अध्यादेश पूर्णतः अलोकतंत्रिक है। परन्तु यह आच्यर्यजनक है कि कांग्रेस पार्टी इन अध्यादेशों का विरोध करने के बजाय अप्रत्यक्ष समर्थन कर रही है क्या यही लोकतंत्र है? और ऐसे उदाहरणों के साथ जब यह 14 दल संसद के चुनाव में लोकतंत्र के बचाने के नाम पर जायेंगे तो क्या देश की जनता इनकी अपील पर विश्वास करेगी? मैं केवल सत्ता के बदलाव के प्रयोग से झोफाक नहीं रखता परन्तु इन अध्यादेशों का समर्थन भी नहीं करता। बिहार के घटनाक्रम के बाद कुछ ऐसा चित्र उकरता है कि केन्द्र की विपक्षीय गठजोड़ के सत्ताकांक्षी दल छोटे दलों को मारकर लोकतंत्र की लडाई लड़ा रहना चाहते हैं। क्या तानाशाही और असंविधानिक अध्यादेशों का समर्थन कर लोकतंत्र की लडाई लड़ी जा सकती है? इन प्रतिपक्षी दलों को याद रखना चाहिये कि आज भी देश में अनेकों ऐसे राज्य हैं जहां कि बड़ी और सत्ताधारी पार्टियां उनके इस गठजोड़ में शामिल नहीं हैं। आन्ध्र, तेलंगाना, उड़ीसा, दिल्ली, पंजाब आदि ऐसे राज्य हैं जो पहले से इस गठजोड़ से बाहर हैं और अब कांग्रेस के अध्यादेश विरोध तथा गठजोड़ में शामिल दलों ने उन्हें एक और तर्क का हथियार दे दिया है।

नाकाफी है छात्रों की आत्महत्या को रोकने के प्रयास



अशोक भाटिया

चंबल नदी के किनारे बसा राजस्थान का शहर कोटा। इस शहर ने पिछले करीब तीन दशक में डॉक्टर और इंजीनियर बनने का ख्वाब देने वाले नौजवानों के बीच अपनी अलग पहचान बनाई है। यहां JEE और NEET के एंट्रेस की तैयारी कराने वाले दर्जनों कोचिंग संस्थान हैं। एक तरह से शिक्षा की मंडी नजर आता है कोटा लेकिन, अब यह शहर अक्सर चर्चा में रहता है अपने ख्वाबों के बोझ तले दबकर मौत को गले लगाने वाले नौजवानों के चलते। सैकड़ों अभाग मां-बाप भी हैं, जो बड़े अरमान लेकर अपने बच्चों को इस सपनों की नगरी में भेजते हैं लेकिन बदकिस्मती से उन्हें उनकी अर्थी लेकर जानी पड़ती है। पिछले दो महीने की बात करें, तो कोचिंग हब कोटा, सुसाइड हब बना नजर आता है। इस दौरान 9 बच्चों ने खुदकुशी की है। इनमें से पांच बच्चे एक ही कोचिंग संस्थान के हैं। अभी यह साल आधा बीमारी से बच्चे भी हैं।

तीर्थयात्रा खुद की खोज का एक समग्र अनुभव है



डॉ प्रियंका सौरभ

तीर्थयात्रा भूमिका निभा सकते हैं। भारत एक समग्र अनुभव है जो भगवान् से भी उतना ही जुड़ा है जि त ना पर्यावरण से । पर्यावरण हिं-पौधे, सुरम्य गनचुम्बी पर्वत यंग से बहती वनों में क्रीड़ा पशु-पक्षी, तन-मन को बायु, सभी तो की महिमा को भड़ी संख्या में धार्मिक तीर्थ स्थलों का घर है, जहां हर साल लाखों लोग आते हैं। वाराणसी, जिसे काशी के नाम से भी जाना जाता है, दुनिया के सबसे पुराने शहरों में से एक है और इसे हिंदू धर्म में एक पवित्र शहर माना जाता है। यह गंगा नदी के तट पर स्थित है और हर साल लाखों लोग यहां आते हैं। हरिद्वार भारत का एक और पवित्र शहर है, जो उत्तरी राज्य उत्तराञ्चंड में स्थित है। यह हिंदू धर्म के सात सबसे पवित्र स्थानों में से एक है और अपने मंदिरों और घाटों (नदी तक जाने वाली सीढ़ियाँ) के लिए जाना जाता है।

मां हम भगवान्
मना किसी ऐसी
जहाँ की भूमि
हीन हो, जहाँ
न बहता हो,
ताएं और फूल
सुबह चहकते
न कानों में न
तीर्थ स्थलों में
कृतिक संबंध
होती है। ऐसा
के ये स्थल
विविभन्न हिस्सों
में लोगों को
जो धार्मिक
नानों में शामिल
साथ आते हैं।
क्षेत्रों और
को एक-दूसरे
नने और एक-
विश्वासों और
बारे में जानने
हा है। धार्मिक
परीय पर्यटन को
कर सकते हैं,
विविभन्न हिस्सों
को देखने और
का पता लगाने

शहर दे रहे जलभराव की समस्याओं को जन्म

सनील कमार महला

इल ही में राजस्थान के सीकर जिला गलय पर एक प्राइवेट कोचिंग में अध्यनरत की सीवरेज व पानी की निकासी के नाम वंबे समय से नवलगढ़ रोड पर खोदे गए औं डूबने से मृत्यु हो जाना बहुत ही दुःखद है। दरअसल, आज हमारे देश में बड़े कस्बों में पानी की निकासी की माकूल अच्छी व्यवस्थाएं नहीं हैं और बहुत बार की निकासी की व्यवस्थाएं अच्छी व न नहीं होने से शहरों में सड़कों पर, गलियों उकानों में, घरों में और स्थान स्थान पर गरव की समस्या पैदा हो जाती है। बहुत तल भराव वाले स्थानों में बिजली का करट न पर भी दुर्घटनाओं को न्यौता मिल जाता है। अस्तव में शहरों में जल निकासी या यूं कहे नेज जिस्टम बहुत ही माकूल होना बहुत हो गई है ताकि बारिश के समय में आम आदी

व परेशानी से अंकुश बारिश के नामे आने से पर पर्याप्त के समय दे दिए हैं और यहां हजारों की इंई व अन्य जगत में आते हैं। पानी की गाएँ नहीं हैं और केवल और रों में आज मध्यधीरी बनी रही में पानी की स्थानों पर साती पानी और उनमें बड़े गड्ढे बन जाते हैं। विडंबना तो यह है कि बड़े गड्ढों को समय पर ठीक से ढंका भी नहीं जाता है। गड्ढों में पानी भर जाने पर यह भी पता नहीं चल पाता है कि गड्ढा कितना गहरा है। आज बारिश आते ही शहरों के विभिन्न मोहल्लों, गलियों में पानी की निकासी के लिए किसी तरह की व्यवस्था नहीं होने से लोगों को लगातार परेशानियों और दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। पानी की निकासी नहीं होने से गलियों, मोहल्लों और सड़कों पर अवसर जाग की स्थिति बन जाती है। पानी की निकासी नहीं होने से लोगों को आवागमन के लिए बहुत सी असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। मोहल्लों और गलियों में जल जमाव होने से सबसे बड़ी परेशानी मच्छरों से होती है। गड्ढों में पानी का भराव होने से मच्छरों की संख्या में भी इजाफा होता है, जिसके कारण लोग मलेरिया, डेंगू, चर्म रोग और डायरिया जैसे विभिन्न रोगों के शिकार होते हैं।

अथव्यवस्था को बढ़ावा देने और विशेषकर आतिथ्य और पर्यटन क्षेत्रों में नौकरियां पैदा करने में मदद मिल सकती है। इसके अलावा, धार्मिक तीर्थ स्थल भी लोगों के लिए प्रेरणा और प्रेरणा का स्रोत हो सकते हैं, जो इन अनुभवों से दूर आकर आध्यात्मिक संतुष्ट और दूसरों के साथ संतुष्ट को भावना महसूस कर सकते हैं। इससे विभिन्न संस्कृतियों और पश्ठभूमि के लोगों के बीच एकता और एकजुटता की भावना को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है, जो एक समान विश्वास या मल्लों का समूह साझा कर सकते हैं। कुल मिलाकर, धार्मिक तीर्थ स्थल पर्यटन को बढ़ावा देने, अंतर-सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देने और आध्यात्मिक विकास और समुदाय-निर्माण के अवसर पैदा करके क्षेत्रीय और सांस्कृतिक संबंधों के निर्माण में मदतप्राप्ता संख्या में आकर्षित होने वाले आगंतुकों का समर्थन करने के लिए व्यापक बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है। सरकारें और निजी निवेशक आसपास के क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास, जैसे परिवहन, आतिथ्य और मनोरंजन सुविधाओं में निवेश करने के लिए इस मांग का लाभ उठा सकते हैं। तीर्थ स्थलों को पर्यटन स्थलों के रूप में प्रचारित किया जा सकता है, जो न केवल धार्मिक उद्देश्यों के लिए बल्कि अवकाश और मनोरंजन के लिए भी आगंतुकों को आकर्षित कर सकते हैं। इससे रोजगार के अवसर पैदा हो सकते हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए राजस्व उत्पन्न हो सकता है। तीर्थ स्थल विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के लोगों को आकर्षित करते हैं, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सहयोग का अनुग्रह मिलता है।



सावन में क्यों होती है शिव पूजा, कैसे पढ़ा इस महीने का नाम शिव पूजा से जुड़ी परंपराएं और कथाएं

**पूजा से जुड़ी
परंपराएं...**

क्यों करते हैं रुद्राअभिषेक

सावन में ही समुद्र मंथन हुआ था। जिसमें हलाहल विष निकला। जिसे भगवान् शंकर ने अपने गले में धारण कर दुनिया को बचाया, लेकिन इस जहर से उनके शरीर में गर्मी बढ़ी। जहर के असर को कम करने के लिए देवी-देवताओं ने उन पर जल चढ़ाया, इसलिए शिवलिंग पर अभिषेक करने की परंपरा बनी।



क्यों चढ़ाते हैं बिल्वपत्र

शिवजी ने कहा है कि मेरे बाएं नेत्र में चंद्रमा, दाएं में सूर्य और बीच में अग्नि का वास है। बिल्वपत्र भी शिवजी के प्रिनेत्र का रूप है। बिल्वपत्र चढ़ाने से भगवान शिव के साथ सूर्य, चंद्र और अग्नि की पूजा अपने आप हो जाती। स्कंद पुराण के मुताबिक बैल के पेड़ में देवी गिरजा, महेश्वरी, दक्षायनी, पार्वती, गौरी और कात्यायनी रहती है, इसलिए बिल्वपत्र चढ़ाने से इन देवियों की आराधना भी हो जाती है।



श्रावण में शिवजी की विशेष पूजा क्यों

मरकंदू ऋषि के पुत्र मारकंडेय ने लंबी उम्र के लिए श्रावण में ही घोर तप कर शिवजी की कृपा प्राप्त की थी। जिससे यमराज भी मार्कंडेय के प्राण नहीं ले सके और वो अमर हो गए। इसी वजह से लंबी उम्र पाने, अकाल मृत्यु और बीमारियों से छुटकारे के लिए सावन में शिवजी की विशेष पूजा होती है।

शिवजी को क्यों चढ़ाते हैं भस्म

शिवपुराण के मुताबिक बिना भस्म के शिव पूजा अधूरी होती है, लेकिन शिवजी भस्म क्यों लगाते हैं इस बारे में जानकारों का कहना है कि जब दक्ष प्रजापति ने शिवजी का अपमान किया तो सती ने हवन कुंड में जलकर प्राण त्याग दिए। तब शिवजी ने सती की चिता की भस्म खुद पर लगाई। तब से शिवजी को भस्म लगाने की परंपरा शुरू हुई। शैव संप्रदाय और तंत्र से जुड़े लोग शिवजी पर मुर्दे की भस्म लगाते हैं।

सावन महीना शुरू हो रहा है। जो कि 31 अगस्त तक रहेगा। शिव का महीना माना जाता है और पूरे महीने शिव आराधना कर जाती है। जिसमें रूद्रभिषेक के बाद बिल्वपत्र और भस्म चढ़ाने समेत कई परंपराएं शामिल हैं, लेकिन ऐसा क्यों है? क्यों शिव को सावन का महीना पसंद है और इस महीने का नाम सावन नहीं पड़ा...? आइए समझते हैं शिव पूजा की परंपराएं और कथाओं से...सावन, दक्षिणायन में आता है। जिसके देवता शिव हैं, इसीलिए इन दिनों उन्हीं की आराधना शुभ फलदायक होती है। सावन के दौरान बारिश का मौसम होता है। पुराणों के मुताबिक शिवजी को चढ़ाने वाले फूल-पत्ते बारिश में ही आते हैं इसलिए सावन में शिव पूजा की परंपरा बनी। स्कंद पुराण में भगवान शिव ने सनत्कुमार को सावन महीने के बारे में बताया कि मुझे श्रावण बहुत प्रिय है। इस महीने की हर तिथि व्रत और हर दिन पर्व होते हैं, इसीलिए इस महीने नियम-संयम से रहते हुए पूजा करने से शक्ति और पुण्य बढ़ते हैं। इस महीने का नाम श्रावण क्यों...? स्कंद और शिव पुराण के हवाले से जानकार इसकी दो वजह बताते हैं। पहली, इस महीने पूर्णिमा तिथि पर श्रवण नक्षत्र होता है। इस नक्षत्र के कारण ही महीने का ये नाम पड़ा।

दूसरा वजह, भगवान शश व न सनकुमार का बताया कि इसका महत्व सुनने के योग्य है। जिससे सिद्धि मिलती है, इसलिए इसे श्रावण कहते हैं। इसमें निर्मलता का गुण होने से ये आकाश के समान है, इसलिए इसे नभा भी कहा गया है।
सावन का महत्व बताते हुए महाभारत के अनुशासन पर्व में आँत्रघ्नि ने कहा है कि जो इंसान मन और इन्द्रियों को काबू में रखकर एक वक्त खाना खाते हुए श्रावण मास बिताता है, उसे तीर्थों में स्नान करने जितना पुण्य मिलता है।
शिव से जड़ी 3 कहानियां...

देवी सती ने ही पार्वती के रूप में दूसरा जन्म लिया था। इस जन्म में भी शिव को पति के रूप में पाने के लिए वे कठिन तप कर रही थीं। शिव ने पहले सप्तर्षियों को परीक्षा के लिए भेजा। सप्तर्षियों पार्वती के पास पहुंचकर शिवजी की बहुत बुराई की, उनके दोष गिनाए, लेकिन पार्वती अपने संकल्प पर अडिग रहीं। इसके बाद महादेव खुद आए। उन्होंने पार्वती जी को वरदान दिया और अंतर्धीन हो गए। तभी एक बच्चे की आवाज सुनी रही। पार्वती जन्म तप कर रही थीं, उसी के पास मौजूद तालाब में मगरमच्छ ने एक बच्चे का पैर पकड़ रखा था। पार्वती वहां पहुंचीं और मगरमच्छ ने बच्चे को छोड़ने को कहा। मगरमच्छ ने अपना नियम बताते हुए इनकार किया कि दिन के छठे पहर में जो मिलता है, उसे आहार बना लेता हूं। इस पर पार्वती ने पूछा, इसे छोड़ने के बदले क्या चाहोगे? मगरमच्छ ने कहा, अपनै तप का फल मुझे दे देंगी, तो बालक को छोड़ दूंगा। पार्वती तत्काल तैयार हो गईं, पर मगरमच्छ ने उन्हें समझाया कि वे क्यों एक बालक के लिए अपने कठिन तप का फल दे रही हैं, लेकिन पार्वती ने दान का संकल्प किया। उन्होंने ऐसा करते ही मगर का शरीर चमकने लगा। अचानक बच्चा और मगर, दोनों गायब हो गए और उनकी जगह शिव प्रकट हुए। उन्होंने बताया कि वो परीक्षा ले रहे थे। चूंकि पार्वती ने अपने तप का फल शिव को ही दिया था, इसलिए उन्हें दोबारा तप करने का क्रम नहीं गयी।

जरूरत नहीं रहा।
कामदेव को भस्म किया -
शिव को कामांतक भी कहते हैं। इसके पीछे कथा है। तारकासुर ब्रह्माजी से दो वरदान पाए थे। पहला, तीनों लोकों में उसके समान ताकतवर कोई न हो और दूसरा, शिवपुत्र ही उसे मार सके तारकासुर जानता था कि देवी सती के देहांत के बाद शिव समाधि में जा चके हैं, जिससे शिवपत्र होना असंभव था। वरदान पाकर

हृदय में रहेगा। वह कृष्णावतार के समय कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न के रूप में जन्म लेगा। तुम फिर उसकी पत्नी बनोगी। उस समय रति ने मायावती के रूप में जन्म लिया था।

अशंभ से हआ शंभ -

अशुम से हुआ शुभ -
नर्मदा नदी के किनारे धर्मपुर नाम का सुंदर नगर था। उसमें
विश्वानर नाम का ब्राह्मण अपनी पत्नी सुचिस्मति के साथ रहता
था। दोनों शिव भक्त थे और उन्होंने पुत्र पाने के लिए उनसे
वरदान मांगा कि स्वयं भगवान् शिव उनके पुत्र के

रूप में जन्म ले।
शिव के वरदान से उनके यहां एक पुत्र का जन्म हुआ, जिसका नाम गृहपति था। जब बालक ग्यारह साल का था, तब देवर्षि नारद ने उसका हाथ देखकर भविष्यत्वाणी की कि सालभर के भीतर उसके साथ कुछ अशुभ होगा, जो आग से जुड़ा होगा। जब मां-बाप ये सुनकर दुखी हुए, तो बेरे ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा कि वे दुखी न हों, क्योंकि वह भगवान को प्रसन्न कर लेगा। इससे माता-पिता से आज्ञा लेकर वह शिव की नगरी काशी पहुंचा। वहां उसने गंगा के मणिकर्णिका घाट पर स्नान किया और पूरे साल शिवलिंग की पूजा की। जब नारद मुनि द्वारा बताया अनिष्ट समय आया, तो देवराज इंद्र ने प्रकट होकर उससे वरदान मांगने को कहा। बालक ने वरदान लेने से मना किया और कहा वो केवल भगवान शिव से ही वर प्राप्त करेगा।

य सुनकर इद्र बहुत गुस्सा हुए आर उन्हान इस बालक का सबक सिखाने के लिए वज्र उठा लिया। बालक ने भगवान शिव से रक्षा की याचना की। तभी शिव प्रकट होकर बोले- डरो मत। मैं तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए इंद्र के वेश में आया था। मैं तुम्हें अग्नीश्वर नाम देता हूँ। तुम आग्नेय दिशा (दक्षिण-पूर्व दिशा) के रक्षक होगे। जो भी तुम्हारा भक्त होगा, उसको अग्नि, विजली या अक्षय गत्ता का दर्शन देंगा। अग्नि तो शिव का प्रक रहा।

मंगलवार 4 जुलाई से सावन के पवित्र मास की शुरुआत हो चुकी है। सावन का महीना भगवान शिव को सबसे अधिक प्रिय है। वैसे तो पूरा महीना ही विशेष होता है, लेकिन इसमें पड़ने वाले सोमवार व्रत करने के लिहाज से बेहद खास होते हैं। माना जाता है कि सावन में भगवान शिव को जल चढ़ाने से वे अत्यधिक प्रसन्न होते हैं। इसके अलावा, जल चढ़ाने वाले साधकों पर उनकी विशेष कृपा बरसती है। सावन के पावन महीने में साधक भोलेनाथ को गंगा जल, चंदन, धूतूरा, बेल के पत्ते, गाय का शुद्ध दूध, फल, मिठाई आदि का अर्पण करते हैं। ज्यातिष्ठशास्त्र के अनुसार, इस पवित्र माह में दिखने वाले कुछ स्वप्न भी आपका भविष्य बताते हैं। ये स्वप्न

पापके जीवन की तरक्की की ओर शारा करते हैं। गावन का महीना कई लिहाज से बेहद वास होता है। इस माह भगवान शिव नी और से स्वप्न में दिखने वाली कुछ शीर्जें आपके भाग्य की ओर संकेत रखती हैं। ये संकेत सावन के समापन त्रुवार, 31 अगस्त यानी सावन की अर्पिमा तक मिलेंगे। हालांकि इसके दोष में अधिकमास भी होगा, ये संकेत इस समय कुछ हल्के हो सकते हैं। पाइए जानते हैं सावन में स्वप्न में दिखने वाली कौन सी चीज किस ओर शारा करती है।
भगवान शिव को देखना

**सावन में
इनका स्वप्न में
आना बहुत श्रभ**



गं
भि
ति
स्त
वे
स्थ
धि
ज
व
न
व
म
न
म
ऐ

सावन के पवित्र महीने में भगवान शिव को स्वप्न में देखना अत्यंत शुभ माना जाता है। माना जाता है कि भगवान शिव को स्वप्न में देखने से जीवन में तरक्की और उन्नति की राह खुलती है। ऐसे में जिस दिन आपको यह स्वप्न आए तो उसी दिन से नियमित शिवलिंग पर जल चढ़ाना चाहिए। ऐसा करने से आर्थिक संकट भी दूर होता है।

गंगा की धार दिखना
गंगावान शिव के प्रिय महीने में गंगा की धार दिखना बेहद शुभ माना जाता है। इस तरह वज्ञ का मतलब है कि आप स्वभाव से बहुत हार्दिक और पवित्र हैं। यदि आपके वज्ञ में मां गंगा की धार दिखती है तो जलनावान होने का संकेत हो सकता है। माना जाता है कि इस तरह से स्वप्न देखने से घटी दरिद्रता भी खत्म होती है।
गांग-नागिन का जोड़ा दिखना
पास्तु शास्त्र के मुताबिक, सावन के पवित्र महीने में यदि आपको सपने में सांप या नाग-नागिन का जोड़ा दिखता है तो अत्यधिक शुभा नाना जाता है।
से यदि किसी भी व्यक्ति को सावन के

दौरान ये ये चीजें स्वप्न में दिखती हैं तो माना जाता है कि उसके साथ जल्द ही कुछ विशेष होने वाला है। नाग-नागिन का जोड़ा यदि सोमवार के दिन दिखते हैं तो विवाहित जीवन काफी खुशगावर होता है।

बोलते मेंढक और तैरती मछलियां दिखना

सावन महीने में सपने में मेंढक को बोलते और मछलियों को पानी में तैरता देखना भी शुभ माना जाता है। इसे लेकर मान्यता है कि इस सपने को देखने वाले व्यक्ति का जीवन जल्दी ही सुधरने के साथ ही उसकी किसमत भी चमकने वाली है।

मेंढक का बोलना शुद्धता और मछलियों का तैरना धनागमन की निशानी भी माना जाता है।

इंटरव्यू के दौरान शाहरुख खान ने लेडी गगा के साथ किया कुछ ऐसा, गुस्से से आग बबूला हुए लोग



बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान अपनी बड़ी फैमिली फैन फैलोइंग और एक्ट्रेसों के साथ पोलाइट बिहेवियर के लिए जाने जाते हैं। हालांकि उनका एक थ्रोवैक वॉइडियो इन दिनों खुले वायरल हो रहा है, जिसमें वे अमेरिकन सिंगर और एक्ट्रेस लेडी गगा के साथ इंटरव्यू करते नजर आ रहे हैं। वायरल हो रहा ये वॉइडियो 2011 का बहात रहा है, जब लेडी गगा अपने इंडिया टूर पर थीं। वॉइडियो में देखा जा सकता है कि शाहरुख और लेडी गगा के ऊपर चले गए, और लगभग लेडी गगा के ऊपर चढ़ते हुए घड़ी लेने के लिए फोर्स करने लगे। इस दौरान लेडी गगा, शाहरुख से बचती नजर आई और गिप्ट लेने से महसूस करनी रही।

लोगों ने सुनाई खारी-खोटी

इस बीच जब शाहरुख नहीं मानते तो लेडी गगा ने उनसे कहा कि वे घड़ी किसी फैन को दे सकते हैं, तो शाहरुख कहते हैं, 'आग वह चाहें तो इसे दे सकती हैं।' अब पुराने वॉइडियो में शाहरुख को लेकर कई इंटरव्यूज ने उन्हें ट्रोल किया और खारी-खोटी सुनाई। एक यूजर ने लिखा, 'ये कितना फॉनी है कि फिल्म में तो 'नो' का मतलब 'नो' का मैसेज देते हैं, लेकिन खुद जो खुद भाषण देते हैं वही अपनी बात को फॉलो नहीं करते'। एक अन्य यूजर ने कहा, 'अगर रणवीर सिंह या वरुण धवन ने ऐसा किया होता, तो इस हरकत पर लोग उन्हें लगाकर मार देते'। एक कमेंट में ये कहा गया कि शाहरुख को नजदीकी आने से लेडी गगा असहज महसूस कर रही थी।

क्या किया शाहरुख ने?

एक रेडिट यूजर ने इस वॉइडियो को पोस्ट करते हुए कैशन में लिखा, 'क्या अपने लगाता है कि यहां उनका (शाहरुख) व्यवहार एकसेटेबल है?' बता दें कि अपनी मजेदार बातचीत के दौरान, शाहरुख ने लेडी गगा को पसंद नहीं आया और अब उन्हें ट्रोल किया जा रहा है।

किसिंग किलप के वायरल होने से परेशान थे शाहिद : बोले- लगा जैसे सब कुछ खत्म हो गया; 24 साल की उम्र में प्राइवेसी छिन गई

शाहिद कपूर ने कहा कि वे जब इंडस्ट्री में नए थे तब उनकी किसिंग वाली एक किलप वायरल हुई थी। शाहिद इस घटना से बहात रुद्ध प्रेशर हो गए थे। उन्हें लगा था कि जो उस वक्त सिर्फ 24 साल के थे। वो ये सब झेलने के लिए तैयार नहीं थे।

शाहिद ने कहा कि उनकी प्राइवेसी किल्कुल खत्म हो गई थी। हालांकि वो चाह कर भी इसके बारे में कुछ कर नहीं सकते थे। बता दें कि 2004 में एक किलप वायरल हुआ था। क्या यह गया कि उस किलप के बाद शाहिद और करीना कपूर थे। हालांकि इसकी कपी पुष्टि नहीं हो सकी। अब उन्होंने इसकी बाद खुलकर इसके बारे में बात की है।

शाहिद को उस वक्त सब कुछ खत्म लग रहा था

शाहिद ने मिड डे से बातचीत में कहा- मैं उस वक्त पूरी तरह बर्बाद महसूस कर रहा था। क्या हुआ, क्यों हुआ..समझ ही नहीं आ रहा था। ऐसे लग रहा कि किसी ने मेरी प्राइवेसी पर हमला बोल दिया है।

मैं सिर्फ 24 साल का था। इस उम्र में ये सभी चीजें ज्यादा अप्रभावित करती हैं। उस वक्त आप खुद अपनी फैलिंग्स के बारे में सही से सोच नहीं पाते। यहां तक कि जिस लड़की की आप डेट करते हैं, उसके बारे में भीठीक से नहीं जानते। सोनारी आप दोनों एक्टर हैं और मैं इसके साथ थे सब हो जाए।

शाहिद ने कहा कि अब तो सभी चौकन्ना रहते हैं। उस वक्त उनके बारे में उन्होंने 500 रुपए दे भी दिए। ये बात सुनकर शाहिद जोर से हंसे।

शाहिद ने कहा कि अब तो सभी चौकन्ना रहते हैं। उस वक्त उनके बारे में उन्होंने कहा- यह एक बाला हो गया है। शाहिद ने कहा- अब तो सभी शादी- था। शाहिद ने कहा- अब तो सभी शादी हो गये हैं।

इस साथ अमिर खान ने इंटरव्यूर अन्ने दिन बोला-

यूट्यूबर जैबी को ए ने किया खुलासा, कहा- ब्रेसलेट खोना नहीं चाहते थे आमिर

बारे में पूछ तो आमिर ने कहा, 'मैं बीती रात सलमान खान के साथ था। हम उसकी फिल्म सेलेब्रेट कर रहे थे।'

हम दोनों ने घोड़ी से ड्रिंग करते हुए और नशे से मलाकात सैफ अली खान से हुई।

करीना को सैफ से प्यार हो गया। 2012 में सैफ और करीना ने शारीर कर ली। शाहिद ने भी 2015 में मीरा रजपूत से अरेंज मैरिज कर ली। अब शाहिद और करीना दोनों अपने शादी-सुधा जीवन में काफी खुश हैं।

मैं इसे कभी नहीं उतारा,

पर तम इस ब्रेसलेट को रख सकते हों।'

'जैबी ने इस ब्रेसलेट को रख सकते हों।'

हम दोनों ने घोड़ी से ड्रिंग करते हुए और नशे से मलाकात होकर मुझे अपना ब्रेसलेट दे दिया। उसने बोला, 'तुम मेरे भाई हो।' हम दोनों को कपी करके बात से जीवन से एक दूसरे को किया है। हम दोनों ने घोड़ी से एक दूसरे को मैंने इसे कभी नहीं उतारा,

पर तम ब्रेसलेट को रख सकते हों।'

'जैबी ने इस ब्रेसलेट को रख सकते हों।'

मैं बीती रात सलमान खान के बारे में बात करते हुए मर्याद मधुर ने कहा है- मैं मूल रूप से तो कान्यका तौर पर पॉलिटिकल एफिलियटर हूं, पर किंगना रनोट का गृहीत हूं। लेकिन, दोनों फिल्मों पर कानूनी कारबाई के बाद घुमड़ हो रहे हैं। दरअसल, किंगना के पॉलिटिकल एडवाइजर और करीना रनोट के बाद घुमड़ हो रहे हैं। दरअसल, किंगना के पॉलिटिकल एडवाइजर और करीना रनोट के बाद घुमड़ हो रहे हैं।

हम दोनों ने घोड़ी से ड्रिंग करते हुए और नशे से मलाकात होकर मुझे अपना ब्रेसलेट दे दिया। उसने बोला, 'तुम मेरे भाई हो।' हम दोनों को कपी करके बात से जीवन से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।

किंगना की घोड़ी से एक दूसरे को किया है।



अडाणी एंटरप्राइजेज ने 'ट्रेनमैन' के 30% स्टेक्स खरीदे

ऑनलाइन टिकट बुकिंग कंपनी एसईपीएल से 3.56 करोड़ रुपए में हुई डील

मुंबई, 9 जुलाई (एजेंसियां)। अडाणी एंटरप्राइजेज ने स्टार्क एंटरप्राइजेज प्राइवेट लिमिटेड (एसईपीएल) से 30% स्टेक्स खरीदे हैं। इस कंपनी की जानकारी अडाणी एंटरप्राइजेज ने शनिवार (8 जुलाई) को स्टॉक एक्सचेंज फाईलिंग में दी है। पिछले महीने ही अडाणी एंटरप्राइजेज ने एसईपीएल की 100% हिस्सेदारी का अधिग्रहण करने की बात कही थी।

अडाणी एंटरप्राइजेज ने 3.56 करोड़ रुपए में खरीदे

स्टेक्स कंपनी के स्टेटमेंट के मुताबिक, अडाणी एंटरप्राइजेज की सफिलियरी अडाणी एंटरप्राइजेज अब जल्द ही लैब्स प्राइवेट लिमिटेड से 30% स्टेक्स करीब 3.56 करोड़ रुपए में खरीदे हैं।



फाईलेशनल ईयर 2022-23 (अप्रैल 2022 से मार्च 2023) में एसईपीएल का कारोबार 4.51 करोड़ रुपए का रहा था। एसईपीएल का अधिग्रहण करके अडाणी ग्रुप रेलवे सेक्टर में कदम रखने की तैयारी कर रहा है। अडाणी एंटरप्राइजेज अब जल्द ही ट्रेनमैन के जरिए ऑनलाइन ट्रेनिंग को सेल करेगी।

इन्फोर्मेशन सेक्टर में उसका दूसरा वेचर है। इससे पहले अक्टूबर 2021 में अडाणी एंटरप्राइजेज ने लिपाकार्ट की ऑनलाइन ट्रैवल एग्रीवेट लियररिप्र प्राइवेट लिमिटेड के माइनरिटी स्टैक खरीदे थे। इससे पहले अडाणी एंटरप्राइजेज ने बताया था, 'अडाणी डिजिटल लैब्स प्राइवेट लिमिटेड में एंट्रप्राइजेज प्राइवेट लिमिटेड में 100% हिस्सेदारी का अधिग्रहण

करने की बात कही थी। लिमिटेड को 'ट्रेनमैन' के नाम से भी जाना जाता है। गुरुग्राम बस्ड स्टार्क एंटरप्राइजेज ही इस प्लेटफॉर्म ऑपरेटर करता है। आईआईटी-रुडकी के ग्रैन्युएट कम्पनी और कम्पनी द्वारा ट्रेनमैन के फाउंडर हैं। ट्रेनमैन को विनीत और करण ने 2011 में बनाया था। ये इंडियन रेलवे कैरिएर एंड ट्रैनिंग कॉरपोरेशन अधिकृत द्वारा ट्रिकट बुकिंग स्टार्ट-अप है। यह एक इंडियन ट्रैवल बुकिंग एप्लिकेशन है, जो प्रेसेज़स को कई तरह की सर्विसेज प्रोवाइड करती है। इस ऑल-इन-वन ट्रेन टिकट बुकिंग के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म 'ट्रेनमैन' की पेंटेंट है। एस्टार्क एंटरप्राइजेज द्वारा ट्रिकट बुकिंग के अलावा आप सूनामार स्टेट्स, कोच की पोसिनां, द्रेन की अवेलिलिटी जैसी कई जानकारी हासिल कर सकते हैं।

स्टार्क एंटरप्राइजेज प्राइवेट

मार्क जुकरबर्ग की सिक्योरिटी पर चौकाने वाला खुलासा तीन साल में करोड़ों डॉलर हुए खर्च

नई दिल्ली, 9 जुलाई (एजेंसियां)। मेटा ने पिछले तीन साल में सोइओ मार्क जुकरबर्ग की पर्सनल सिक्योरिटी पर 40 मिलियन डॉलर से ज्यादा खर्च किए हैं। जबकि जुकरबर्ग के परिवार की ओर से चालित फारंडेशन ने उन समूहों को लाखों डॉलर का दान भी दिया है, जो 'जुलिस' को बढ़ाना करना चाहते हैं और ये एंटरप्राइजेज के लिए अधिग्रहण करके अडाणी ग्रुप रेलवे सेक्टर में कदम रखने की तैयारी कर रहा है। अडाणी एंटरप्राइजेज अब जल्द ही ट्रेनमैन के नाम से भी जाना जाता है।



रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गिफ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है। सिस्टेम के द्वारा दूर हो चुकी है।

किस एंटी पुलिस यूप को कितना दान इस रिपोर्ट का दावा है कि 2020 के बाद से, DefundPolice.org के पीछे के संगठन, पॉलिसीलंक को चैन जुकरबर्ग इनिशिएटिव से 3 मिलियन डॉलर का दान मिला है। यह संगठन पुलिस विरोधी है। इसके अलावा, मार्क जुकरबर्ग और उनकी पत्नी प्रिसिला चान की सोइडआई ने 'सोलीडेयर' नामक एक अन्य एंटी कॉर्प यूप को 2.5 मिलियन डॉलर की सहायता की भी पेशकश की है।

जुकरबर्ग को कितना फायदा

मेटा की सोइओ की इनकम गिछले कुछ समय से खूब बढ़ी है। मार्क जुकरबर्ग को इस साल 30 जन तक 58.9 अरब डॉलर का फायदा हुआ है। इन्स्ट्रमेंट्स के अनुसार, मार्क जुकरबर्ग की कुल इनकम 106 अरब डॉलर ही चुकी है। सिस्टेम के द्वारा दूर हो चुकी है। यह दूसरे दौर में इन्हें 562 मिलियन डॉलर का नुकसान उठाना पड़ा है। मार्क जुकरबर्ग दुनिया के अमीरों की लिस्ट में 9वें सबसे अमीर व्यक्ति है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गिफ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गि�फ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गिफ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गिफ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गिफ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गिफ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गिफ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गिफ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गिफ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गिफ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गिफ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गिफ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गिफ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गिफ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गिफ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने बिना किसी बोनस भुगतान, इक्विटी गिफ्ट और किसी अन्य सुआवजे के सालाना वेतन में केवल एक डॉलर रिसीव करने का रिक्वेस्ट किया है। मौर्यतव और यह काम के अनुभव द्वारा दूर हो चुकी है।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि जुकरबर्ग ने

